Journal of Social Issues and Development (JSID)
(Himalayan Ecological Research Institute for Training and Grassroots Enhancement (HERITAGE)
ISSN: 2583-6994 (Vol. 3, Issue 2, May-August, 2025. pp. 129-144)

राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय कपकोट : सरकारी स्कूल की ब्रांडिंग (केस स्टडी)

डॉ0 केवलानंद काण्डपाल

सारांश

पिछले ढाई दशकों, विशेषकर 1990 के बाद उदारीकरण के दौर में अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में निजी क्षेत्र का दखल बढ़ा है, शिक्षा के क्षेत्र में भी यह दखल सारभूत रूप से बढ़ा है। उच्च शिक्षा में बड़ी मात्रा में यह दखल बढ़ा है तो स्कूली शिक्षा में भी इसकी गहनता बढ़ी है। अभी बहुत अरसा नहीं बीता है जब समाज एवं समुदाय के लोग सरकारी विद्यालयों को 'हमारा विद्यालय' कहकर संबोधित करते थे, अब यह संबोधन बदलकर 'सरकारी विद्यालय' हो गया है और उसमें भी निजी विद्यालयों के बरक्श सरकारी विद्यालयों के प्रति एक हिकारत का भाव अधिक परिलक्षित होता है। हमारे देश में स्कूली शिक्षा से सम्बंधित विमर्श में सरकारी स्कूल बनाम निजी स्कूल का मुद्दा प्रमुखता से शामिल होता जा रहा है, बल्कि हो यह रहा है कि निजी स्कूल अपनी खासियत को एक विशेष तरीके से परोसकर आमजन को लुभाने में कामयाब भी हो रहे हैं। विगत दो दशकों से निजी स्कूलों में नामांकन भी निरंतर बढ़ते जा रहे हैं, इसके विपरीत सरकारी स्कूल स्वयं को उस तरह से प्रस्तुत नहीं कर पा रहे हैं अर्थात ब्रांडिंग (Branding) नहीं कर पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में यह बहुत समीचीन हो जाता है कि सरकारी स्कूलों की ब्रांडिंग (Branding) के बारे में व्यापक विचार–विमर्श किया जाए।

प्रधानाचार्य, रा0 इ0 का0 मण्डलसेरा, बागेश्वर (उत्तराखंड), 263642, Kandpal_kn@rediffmail-com

इस आलेख में स्कूल ब्रांडिंग के बारे में विमर्श का प्रयास किया गया है और जनपद बागेश्वर के राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय कपकोट के ब्रांड में विकसित होने की प्रक्रिया एवं कारणों को जांचने–परखने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत वृत्त अध्ययन (ब्मॅजनकल) में विद्यालय के रूपांतरण की आरम्भिक दो वर्षों की यात्रा का अध्ययन किया गया है। बाद के वर्षों में भी विद्यालय की सफलता की यह यात्रा अनवरत जारी है।

(282 शब्द)

प्रस्तावना

भारत की स्कूली शिक्षा प्रणाली विश्व की सबसे बड़ी शिक्षा प्रणालियों में से एक है, जिसमे 6 से 18 आयु वर्ग के 26 करोड़ बच्चे नामांकित हैं लगभग 1 करोड़ शिक्षक शिक्षण कार्य में नियोजित हैं। यद्धपि अभी भी बड़ी संख्या में बच्चे सरकारी विद्यालयों में नामांकित हैं परन्तु विगत कुछ वर्षों, विशेषकर दो दशकों से निजी विद्यालयों में अभिभावकों की रूचि बढ़ी हैं और परिणाम स्वरुप सरकारी विद्यालयों की तुलना में निजी विद्यालयों में बच्चों के नामाकन दर में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। लेकिन यह भी सत्य है की आज भी संख्या के लिहाज से बढ़ी संख्या में सरकारी विद्यालयों में 6 से 18 आयु वर्ग के बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

एक नवीनतम अध्ययन में वर्ष 2010–11 से वर्ष 2015–16 के बीच भारत के 20 राज्यों के सरकारी स्कूलों में नामांकन लेने वाले छात्रों की संख्या में 1.3 करोड़ की कमी हुई है। जबकि निजी स्कूलों ने 1.75 करोड़ नए छात्रों का नामांकन हुआ है। एएसईआर–2016 की रिपोर्ट के मुताबिक, निजी स्कूलों की संख्या में 35 फीसदी का इजाफा, सरकारी स्कूलों की संख्या सिर्फ 1 फीसदी बढ़ी। यह वर्ष 2010–11 में निजी विद्यालयों की २.२ लाख से बढ़ कर वर्ष 2015–16 में 3 लाख हो गयी जबकि सरकारी स्कूलों के सन्दर्भ में यह आंकड़ा 10.3 लाख से बढकर 10.4 लाख रहा। भारत में स्कूली शिक्षा प्रदान कर रहे विद्यालयों में विविधता है, इसको निम्नांकित रेखाचित्र से स्पष्ट किया जा सकता है–

उपरोक्त रेखाचित्र से यह अनुमान लगाने में आसानी होती है कि हमारे देश में निजी विद्यालय, स्कूली शिक्षा प्रणाली का एक छोटा सा हिस्सा होने के बावजूद यह सरकारी शिक्षा प्रणाली के समक्ष एक प्रकार से चुनौती पेश कर रहा है। देश में लगभग 13.4 स्कूलों में से 22.4 प्रतिशत (3 लाख स्कूल) निजी स्कूल हैं जबकि स्कूलों में कुल नामांकनों में से निजी स्कूलों में नामांकन का प्रतिशत सरकारी स्कूलों की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ता जा रहा है और सरकारी स्कूलों में निरंतर घट रहा है।

अन्य कारणों में से एक महत्वपूर्ण कारण जो समझ में आता है, वह यह है कि निजी स्कूलों की तरह सरकारी स्कूल अपनी ब्रांडिंग करने में कामयाब नहीं हो पा रहे हैं। निश्चित

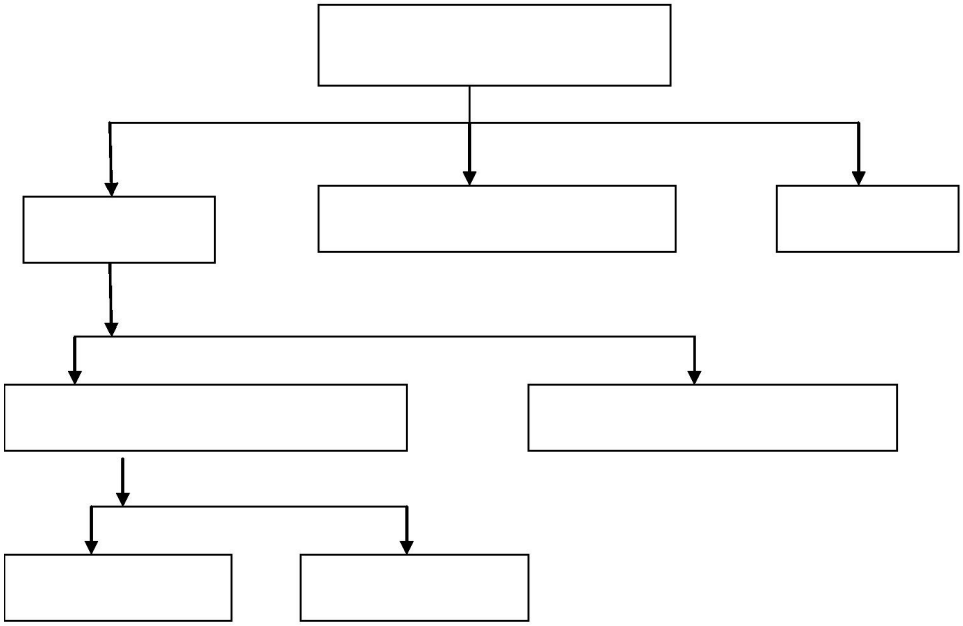

* उत्तराखंड के परिप्रेक्ष्य में सरकारी विद्यालयों में से प्रत्येक विकास खंड में एक–एक प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय को मॉडल स्कूल के रूप में चिह्नित/विकसित किया गया है।

रूप से ब्रांडिंग के लिए यह भी जरुरी है कि इस लायक पहले कुछ किया भी जाए, जिसको ब्रांड के रूप प्रस्तुत कर सकें।

स्कूल ब्रांडिंग

ब्रांडिंग का प्रश्न तभी उत्पन्न होता है जबकि सेवा प्रदाता एक से अधिक मौजूद हों तथा सेवा उपभोक्ता के लिए चयन का विकल्प मौजूद हो और उपभोक्ता के पास श्रेष्ठ विकल्प के चयन के लिए आर्थिक सामर्थ्य भी हो। वस्तुतः 'ब्रांडिंग उपभोक्ता और हितधारक के मनो–मस्तिष्क में किसी प्रोग्राम, स्कूल या डिग्री के बारे में एक छवि/धारणा है।'[1] (Tonio Palmer, 2007)

विकिपीडिया ब्रांडिंग को एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करता है, 'इस प्रक्रिया में उपभोक्ता के मस्तिष्क में किसी उत्पाद का यूनिक नाम और छवि सृजित की जाती है, मुख्यतः किसी थीम पर निरंतर प्रचार के माध्यम से यह किया जाता है। ब्रांडिंग का उद्देश्य अपनी प्रासंगिकता स्थापित करना और अन्यों से अलग हटकर प्रस्तुत करना है जिससे उपभोक्ताओं को आकर्षित किया जाये तथा उनके अपनी संस्था के प्रति वफादार (Loyal) बनाये रखा जा सके।'[2] (विकिपीडिया, दी फ्री इनसाइक्लोपीडिया).

स्कूल की ब्रांडिंग ठीक उस तरह से तो नहीं हो सकती, जिस प्रकार से कटु–प्रतिस्पर्धा के क्रम में व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में विज्ञापनों एवं प्रचार माध्यमों से अपने उत्पाद या सेवा को दूसरों से श्रेष्ठ बताया जाता है परन्तु स्कूलों के पास बताने के लिए ऐसा तो कुछ होना ही चाहिए, जिस पर लोग विश्वास कर सकें। यह स्कूल ब्रांडिंग की दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

निजी स्कूलों की ब्रांडिंग

निजी विद्यालय मूलतः व्यावसयिक उद्देश्यों के लिए संचलित होते हैं, इसलिए इनके द्वारा उपभोक्ताओं (वस्तुतः बच्चों के माता–पिता एवं अभिभावक) को लुभाने के लिए प्रवेश सत्र के प्रारम्भ में अपने विद्यालय की जिन खासियतों का दावा किया जाता है, ब्रांड पोजिशनिंग की जाती है, उनमें प्रमुखतः निम्न होते हैं–

- विगत वर्षों में विद्यालय के छात्रों का चयन कहाँ–कहाँ हुआ
- बोर्ड परीक्षा फल, मेरिट सूची में स्थान प्राप्त छात्रों की सूची एवं विवरण
- अंग्रेजी माध्यम से शिक्षण
- प्रत्येक कक्षा एवं विषय के लिए शिक्षकों की उपलब्धता, शिक्षकों का प्रोफाइल
- कंप्यूटर शिक्षा
- स्मार्ट कक्षा
- वर्ष भर की पाठ्यचर्या एवं एक्टिविटी का कैलेंडर
- पर्सनालिटी डेवलपमेंट एक्टिविटीज
- सीमित सीट, प्रवेश परीक्षा (शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 की धारा 12(1) (स) के तहत प्रवेशित बच्चों पर लागू नहीं)
- ड्रेस कोड, आदि।

निजी स्कूलों के विगत वर्षों के वर्ष दर वर्ष प्रवेश विज्ञापनों का गहनता से अवलोकन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये स्कूल अपने ब्रांड की विश्वसनीयता को बनाये रखने के लिए एक खास रणनीति अपनाते हैं। इस रणनीति में अलग–अलग स्तर पर बच्चों की कक्षागत पढायी–लिखायी के साथ–साथ किसी विशेष परीक्षा के लिए तैयारी पर जोर देना। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर जवाहर नवोदय विद्यालय, उत्तराखंड राज्य के सन्दर्भ में राज्य नवोदय विद्यालय, सैनिक स्कूल घोडाखाल, हिम ज्योति फाउंडेशन (बालिकाओं हेतु) की तैयारी, माध्यमिक स्तर पर मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि की तैयारी। इसके लिए प्रतिभाशाली

बच्चों पर विशेष ध्यान देकर इनकी सफलता को अपने ब्रांड के रूप में आगामी वर्षों में उपयोग करते हैं। यहाँ पर उल्लेखनीय है कि यह अवसर सभी बच्चों को सामान रूप से उपलब्ध नहीं होते हैं, इसके लिए प्रछन्न रूप से अतिरिक्त शुल्क लेने की बातें भी सामने आती रहती हैं।

सरकारी स्कूलों की ब्रांडिंग

सरकारी स्कूलों की ब्रांडिंग में कुछ खास किस्म की चुनौतियां सामने आती हैं। सरकारी स्कूलों में जो बच्चे आते हैं, इनमें से बड़ा हिस्सा उन बच्चों का होता है, जो सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से अलाभकर वर्गों से आते है अर्थात इनके पास न तो विकल्प है और ना ही इनकी आवाज सुनी जाती है (Choiceless and Voiceless)। दूसरा–सरकारी स्कूल अध्यापकों की कमी एवं संसाधनों की कमी से भी निरंतर जूझते हैं। अभिभावकों एवं समुदाय से संसाधन सहयोग की बहुत उम्मीद नहीं बधती, वस्तुतः ये आर्थिक रूप से बहुत समर्थ भी नहीं होते।

बागेश्वर जनपद के विशेष सन्दर्भ में सरकारी विद्यालयों में नामांकन के निरंतर कमी के कारणों को जानने–समझने का प्रयास किया गया तो कुछ महत्वपूर्ण बातें सामने आयीं।

- ग्रामीण एवं दुर्गम क्षेत्रों से जनसँख्या के पलायन के कारण सरकारी विद्यालयों में नामांकन कम हुआ है।
- यह पलायन बच्चों को निजी विद्यालयों में पढ़ाने के लिए किसी ऐसे कस्बे या शहरी क्षेत्र में हुआ है जहाँ पर निजी स्कूल उपलब्ध हैं।

इस प्रकार जनसँख्या का पलायन, सरकारी स्कूलों में नामांकन कम होने का कारण एवं परिणाम दोनों ही है। ऐसे अभिभावकों एवं माता–पिता से बातचीत में यह बात भी सामने आयी कि 'सरकारी स्कूलों में तो एक या दो मास्टर हैं, किस प्रकार पांच–पांच कक्षाओं को संभालेंगे? प्राइवेट स्कूल में कम से कम हरेक क्लास के लिए एक मास्टर तो है।' कुछ अभिभावकों का कहना था कि 'यदि हरेक कक्षा के लिए मास्टर इन सरकारी स्कूलों में होते तो कौन अपने बच्चों को फीस देकर प्राइवेट स्कूलों में भेजता?' इस बातचीत से सरकारी स्कूलों की ब्रांडिंग के सन्दर्भ में कुछ सूत्र पकड़ने में मदद मिल सकती है। सरकारी स्कूलों में फीस का न होना, मिड डे मील, निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें, गणवेश, छात्रवृतियां, जिनको सरकार/शिक्षा विभाग द्वारा ब्रांड के तौर पर पेश करने की कोशिश करती है, के बजाय शिक्षक, सीखने–सिखाने हेतु आधारभूत सुविधाओं के आलोक में अभिभावक सरकारी विद्यालयों की छवि बना रहे हैं, ब्रांडिंग कर रहे हैं।

निजी स्कूलों की ब्रांडिंग रणनीति का मुकाबला सरकारी स्कूल उसी रणनीति एवं तरीके से किया जा सकता है जिसको निजी स्कूल अमल में लाते हैं। यह कर दिखाया है, जनपद

बागेश्वर के कपकोट विकास खंड में संचलित राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय कपकोट ने A उत्तराखंड सरकार ने सरकारी विद्यालयों में घटते नामांकन को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2015–16 से प्रत्येक विकास खंड में एक–एक प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय को आदर्श (मॉडल) स्कूल के रूप में चिह्नित/विकसित करने का निर्णय लिया। सरकार के इस प्रयास को सरकारी विद्यालयों की ब्रांडिंग प्रस्थापना के सन्दर्भ में देखा जा सकता है। इसके अंतर्गत पहले से ही मौजूद सरकारी विद्यालय को इसके लिए चिन्हित किया गया, मानकानुसार शिक्षकों की व्यवस्था की गयी। भौतिक संसाधन कमोवेश पूर्ववत ही थे, कुछ आदर्श विद्यालयों ने समुदाय एवं विधायकों के माध्यम से कुछ संसाधन जोड़ने के प्रयास किये गए हैं। जनपद बागेश्वर के विशेष सन्दर्भ में कहा जाए तो इस पहल के सकारात्मक परिणाम कुछ आदर्श विद्यालयों में (विशेषकर प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में) सामने आये। बागेश्वर जनपद के गरुड़ विकास खंड के राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय पिंगलो, नौघर, राजकीय आदर्श उच्च प्राथमिक विद्यालय चौरसों, बागेश्वर विकास खंड के राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय बागेश्वर (प्रथम) एवं कपकोट विकास खंड के राजकीय प्राथमिक आदर्श विद्यालय कपकोट में विद्यालयों में नामांकन में आशातीत वृद्धि दर्ज की गयी। मॉडल स्कूलों की स्थापना के शुरूआती वर्षों से ही, मैं राजकीय प्राथमिक आदर्श विद्यालय कपकोट के अवलोकन एवं अनुश्रवण कार्य से जुड़ा रहा हूँ, यूँ कहा जा सकता है कि फॉलो कर रहा हूँ, सो इस विद्यालय की ब्रांडिंग प्रक्रिया की समझ को साझा कर रहा हूँ। इस विद्यालय के अवलोकन एवं अनुश्रवण के दौरान, विद्यालय के शिक्षकों, बच्चों एवं अभिभावको से बातचीत के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु उभर कर आये, इन्हीं बिन्दुओं पर विमर्श केन्द्रित करते हुए विद्यालय के बारे में एक समग्र तस्वीर पेश करने का प्रयास है।

राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय कपकोट, जनपद बागेश्वर–स्कूल ब्रांडिंग का मामला अध्ययन

यह विद्यालय जनपद मुख्यालय से लगभग 25 किमी0 दूर अवस्थित है। विद्यालय वर्ष 2015–16 में आदर्श विद्यालय के रूप में चिन्हित किया गया। प्रत्येक कक्षा एवं विषय के लिए विद्यालय में 5 अध्यापकों की व्यवस्था की गयी। भौतिक संसाधन लगभग वही थे, पुस्तकों, खेल सामग्री, बैठने के लिए फर्नीचर, स्वच्छ पेयजल, विद्यालय की साज–सज्जा हेतु शिक्षा विभाग द्वारा वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराये गए। उस समय इस विद्यालय में मात्र 45 बच्चे नामांकित थे। वर्तमान समय में विद्यालय में 235 बच्चे नामाकित हैं और 08 अध्यापक कार्यरत है। वर्तमान में कक्षा–वार नामांकित संख्या एवं विषय–वार अध्यापकों का विवरण निम्नांकित तालिका 01 एवं 02 में दिया गया है–

तालिका 01
विद्यालय में कक्षा–वार नामांकित छात्र संख्या (वर्ष 2017–18)

कक्षा	बालक	बालिका	कुल योग
1	24	28	52
2	29	27	56
3	15	17	32
4	23	25	48
5	21	26	47
योग	**112**	**123**	**235**

श्रोत : रा0 आ0 प्रा0 वि0 कपकोट, कार्यालय अभिलेख.

गत वर्ष यह संख्या 210 थी जिसमे 100 बालक एवम 110 बालिकाएं थीं। इस प्रकार गत वर्षों की तुलना में विद्यालय में नामांकन मे लगभग 17 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी। यहाँ पर यह भी उल्लेखनीय है कि विगत तीन वर्षों के अंतर्गत यह संख्या 45 से बढ़कर 235 तक पहुँच गयी है, जो 500 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्शाती है। इससे विद्यालय के सेवित क्षेत्र में पूर्व से संचालित 10 प्राइवेट विद्यालयों से विपरीत (Reverse) नामांकन इस विद्यालय में हुआ, यह केवल शुरूआती कक्षा में ही नहीं हुआ, विद्यालय की लगभग हरेक कक्षा में हुआ और नामांकन में कमी के कारण एक निजी विद्यालय तो बंद ही हो गया अन्य निजी विद्यालय भी लगातार नामांकन घटने से चिंतित हैं। नामांकन में वृद्धि के लिए विद्यालय ने एक खास रणनीति अपनायी। निजी विद्यालय नर्सरी कक्षा से ही बच्चों को प्रवेश दे रहे थे, सो विद्यालय के अध्यापकों ने विद्यालय में नर्सरी कक्षाओं की शुरुआत की, जिससे इन बच्चों का कक्षा 1 में नामांकन सुनिश्चित किया जा सके। इस रणनीति में विद्यालय सफल भी रहा। वर्तमान में नर्सरी कक्षा में 45 बच्चे नामांकित हैं, जो भविष्य में विद्यालय की पहली कक्षा का हिस्सा बनेंगे। यहाँ पर उल्लेखनीय है की उत्तराखंड के प्राथमिक विद्यालयों में नर्सरी कक्षाओं का कोई प्रावधान नहीं है, यह विद्यालय का नवाचारी प्रयास है कि निजी विद्यालयों की ब्रांडिंग का प्रत्युत्तर उनके ही तौर तरीकों से दिया गया।

तालिका 02
विद्यालय में कार्यरत अध्यापक (वर्ष 2017–18)

क्र0सं0	अध्यापक का नाम	पद नाम	विशेषज्ञता विषय
1	श्री ख्याली दत्त शर्मा	प्रभारी प्रधानाध्यापक	गणित
2	श्रीमती विनीता चन्द्रा	सहायक अध्यापक	गणित
3	श्री ठाकुर सिंह रावत	सहायक अध्यापक	विज्ञान
4	श्री हरीश सिंह	सहायक अध्यापक	विज्ञान
5	श्री सुरेश चन्द्र पाण्डे	सहायक अध्यापक	अंग्रेजी

6	श्रीमती नीतू भारती बिष्ट	सहायक अध्यापक	अंग्रेजी
7	मंजु गढ़िया	सहायक अध्यापक	परिवेशीय अध्ययन
8	जयन्ती दानू	शिक्षा मित्र	परिवेशीय अध्ययन

श्रोत : रा0 आ0 प्रा0 वि0 कपकोट, कार्यालय अभिलेख.

विद्यालय में भौतिक संसाधन

विद्यालय में प्रत्येक कक्षा के लिए कक्षा–कक्ष उपलब्ध है। विद्यालय में पुस्तकालय, बालक–बालिकाओं के लिए पृथक शौचालय, पेयजल एवं क्रीड़ागन उपलब्ध है। विद्यालय में बच्चों के सदन गठित हैं, प्रार्थना सभा की गतिविधियां साप्ताहिक रूप से सदनों द्वारा संचालित की जाती है। विद्यालय प्रबन्ध समिति न केवल गठित है अपितु सक्रिय है।

विद्यालय का शैक्षिक वातावरण

स्कूल का वातावरण बहुत सारी परतों से मिलकर बना होता है। जिनमें से कुछ परतें साफ–साफ दिखलायी पड़ती हैं, कुछ बहुत हल्के–फुल्के प्रच्छन्न रूप में मौजूद होती हैं और कुछ तो बहुत खोजबीन के बावजूद सतह पर नजर नहीं आती हैं। अतः इस आलेख में विद्यालय की सारी परतों को खंगाल लेने का दावा बिल्कुल भी नहीं है। विद्यालय की समुदाय में विश्वसनीयता एवं छवि निर्माण के लिए कुछ अलग हटकर किया जाता है, जो आगामी भविष्य में विद्यालय की ब्रांडिंग का एक हिस्सा बनेगा जिसका दावा विद्यालय कर सकेगा। इसकी परख के लिए कुछेक कसौटियां हमें बनानी ही होगीं, जिसके आधार पर विद्यालय के बारे में कोई स्पष्ट नजरिया बनाने में मदद मिल सके। इसके लिए हम विगत एवं वर्तमान में भी चल रहे नवाचारी विद्यालयों जैसे–समरहिल, शान्ति निकेतन, नीलबाग के स्कूल, ऋषि वैली का विद्यालय, आदि के बारे में जानने–समझने का प्रयास करे तो कुछ ऐसी विशिष्टिताऐं इनमें नजर आती हैं, जो सामान्य विद्यालयों से अलग हैं। इनमें प्रमुखतः निम्न हैं–

1. विद्यालय का वातावरण।
2. स्वानुशासन एवं स्वायत्तता।
3. विद्यालय की संस्कृति।
4. सीखने–सिखाने की प्रक्रियाऐं।
5. विद्यार्थी की सहभागिता।
6. समुदाय का विश्वास एवं सरोकार।
7. विद्यालय की उपलब्धियां।

1. विद्यालय का वातावरण–विद्यालय के वातावरण में उसका भवन, पुस्तकालय एवं भौतिक सुविधाओं के साथ–साथ, आस–पास का माहौल, संबंध, भूमिकाओं के साथ–साथ

सुविधाओं तक सभी की निर्बाध पहुंच बहुत महत्वपूर्ण है। कक्षा हो या घर बच्चे के लिए सही वातावरण वह होता है, जहां उसे सांस लेने, स्वयं को खोजने, आत्मविश्वास हासिल करने एवं अपनी क्षमताएं जानने के अवसर मिलें। यदि विद्यालय का वातावरण बच्चों को स्वीकार नहीं करता है तो बच्चे अस्वीकरण के कारण आहत हो जाते हैं, दवाब के कारण तनावग्रस्त हो जाते हैं। इस नजरिये से यह विद्यालय बच्चों को एक भयमुक्त एवं विश्वास का वातावरण देने में सक्षम है। विद्यालय की प्रातःकालीन सभा की गतिविधियां हों, बाल सभा के कार्यक्रम हों या फिर पुस्तकालय का संचालन हो, बच्चे स्वतः स्फूर्त ढ़ंग से अपनी भूमिकाओं का निवर्हन करते हैं। अध्यापक, किन्हीं विशेष स्थितियों में मददगार दिखलाई पड़ते हैं। बच्चों की अधिगम संसाधनों तक अबाध पहुंच, बच्चों में आत्मविश्वास तो पैदा करती ही है, साथ ही विद्यालय के प्रति अपनत्व का भाव भी जगाती हैं। बच्चों में विद्यालय में समय से पहले पहुंचने का उत्साह देखने लायक है। अमूमन विद्यालय जल्दी से पहुंचकर खेल के लिए वक्त निकालना बच्चों को प्रिय है। यहां नजारा कुछ अलग नजर आता है, बच्चे प्रातः कालीन सभा की तैयारी में जुट जाते हैं, कुछ बच्चे अपने पिछले दिन के काम को सम्पन्न करते हैं, कुछ बच्चे आज की विद्यालयी पाठ्यचर्या पर विचार करते हुए देखे जा सकते हैं। सक्षम वातावरण के लिए स्कूल बेहद सकारात्मक कदम उठा रहा है और हर विद्यार्थी को अपनी भूमिका प्रदर्शन के अवसर देता है।

2. स्वानुशासन एवं स्वायत्तता—विद्यालय में अनुशासन की प्रक्रियाएं कुछ इस तरह की हैं कि यह स्वानुशासन का उम्दा उदाहरण हैं। बच्चे एवं अध्यापक मिलकर नियम बनाते हैं, नियम भंग करने पर क्या किया जाना चाहिये? इसके नियम बनाते हैं। बच्चों को किसी विसंगति पर प्रश्न खड़ा करने की आजादी है। यदि बच्चों को लगता है कि हम तो नियमों का पालन कर रहे हैं परन्तु शिक्षक एवं व्यस्क जन इसमें शिथिलता बरत रहे हैं तो बच्चों को पूरी स्वायत्तता है कि वह अपनी राय अपने—अपने सदन नायकों के मार्फत अध्यापकों के सामने रखें। बच्चों ने तो एक बार इसी प्रक्रिया के द्वारा यह भी सुनिश्चित कराया कि वह अमुक अध्यापक से अमुक विषय नहीं पढ़ेंगे क्योकि उनका पढ़ाया समझ में नहीं आ रहा है। हम अमूमन बच्चों को स्वयत्तता का अहसास नहीं दे पाते। स्थान, समय, और विषय वस्तु मोटे तौर पर शिक्षक के हाथों में होते हैं, वही तय करते हैं कि किसे, क्या और कितने समय तक क्या करना है ? विद्यालय में बच्चों की स्वायत्तता का अर्थ है— स्कूल के भीतर सीखने और उसकी हदों के बाहर के जीवन में संबंध बनाने की छूट, स्वयं के भीतर जो चल रहा है, उसे सोचने, प्रस्तुत करने की गुंजाईस एवं साझा करने के लिए स्थान एवं समय उपलब्ध कराना। यह विद्यालय ऐसा करने का प्रयास करता नजर आता है।

3. विद्यालय की संस्कृति—विद्यालय की संस्कृति बच्चों की सीखने—सिखाने की प्रक्रिया में अहम स्थान रखती है। विद्यालय के शिक्षक एवं अन्य स्टॉफ आपसी व्यवहार में लोकतांत्रिक तरीका अपनाते हैं, एक दूसरों के विचारों को स्पेश देते हैं, मिल—जुल कर निर्णय लेते हैं, जहां

जरूरी हो बच्चों को इस प्रक्रिया में शामिल करते हैं। यह सभी बातें मिलकर एक ऐसी संस्कृति को निर्मित करते हैं, जिसे हम समावेशी संस्कृति कह सकते हैं। विद्यालय के कार्यकारी दिनों में प्रधानाध्यापक द्वारा अध्यापकों एवं बच्चों से लगातार बातचात जारी रहती है। ऐसा करने से प्रधानाध्यापक साहब का काफी समय इसमें लगता नजर आता है परन्तु इसका अतिरिक्त लाभ पूरे दिन भर नजर आता है, सभी प्रक्रियाएं सुचारू चलती हैं। अध्यापकों एवं बच्चों की माह में एक बैठक जरूर होती है, जिससे किन्हीं कारणों से उत्पन्न भ्रांन्तियों का समाधान किया जा सके। बच्चों के लिए सुझाव पेटिका में अपने मन की बात लिखकर डालने की व्यवस्था है। इस पेटिका को प्रतिदिन प्रातःकालीन सभा से पूर्व खोलकर यह जानने–समझने का प्रयास किया जाता है कि बच्चों द्वारा रखी गयी बात/सुझाव/शिकायत के समाधान के लिए क्या कुछ किया जा सकता है ? विद्यालय में प्रधानाध्यापक का काम अकादमिक नेतृत्व देना होता है। वह पहल करके नवाचारों को पहले स्वयं लागू करते हैं, बाद में अन्य अध्यापको से उनका आग्रह रहता है। यहां पर उल्लेखनीय है कि प्रधानाध्यापक श्री ख्याली दत्त शर्मा जी स्थानीय हैं और विद्यालय धण्टों के बाद अमूमन एक–दो धण्टे अतिरिक्त विद्यालय में बने रहना उनके लिए सामान्य बात है, इस अवधि में कुछ बच्चे उनके साथ ही सीखने–सिखाने के किसी उपक्रम में होते हैं। अवकाश एवं रविवार को तो वह विद्यालय में रहते ही हैं और कुछ बच्चे भी। बातचीत में उन्होंने बताया कि विद्यालय के अभिलेखों संबंधी कार्य वह घर पर करते हैं, बच्चों के साथ पूरा वक्त मिल जाये इसलिए उन्हे घर पर अतिरिक्त काम करने से आसानी हो जाती है। श्री शर्मा जी प्रचार–प्रसार से बहुत दूर चुपचाप काम करने वाले शिक्षको में शुमार हैं। इसका प्रभाव विद्यालय के अन्य अध्यापको पर साफ नजर आता है। यह विद्यालय की ऐसी संस्कृति का पोंषण करती है, जहां उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्धता महत्वपूर्ण है, व्यक्ति नहीं। सफलता का श्रेय दूसरों को देना बहुत मुश्किल है लेकिन शर्मा जी की बातचीत ही इस वाक्य से शुरू होती है कि सर ! मेरे विद्यालय में गुरू जी बहुत मेहनत करते हैं, मैं तो उनकी तुलना में कुछ खास नहीं कर पा रहा हूं। यही वह मूल्य है जिससे विद्यालय का समस्त स्टॉफ एक टीम की तरह एकजुट नजर आता है।

4. सीखने–सिखाने की प्रक्रियाऐं–जहां तक सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं का प्रश्न है, विद्यालय मॉडल विद्यालय के रूप में विकसित हो रहा है। अतः कक्षा–वार एवं विषय–वार शिक्षको की नियुक्ति की गयी है, ये शिक्षक परीक्षा में चयनित होकर कुछ बेहतर करने की प्रेरणा से यहां कार्य कर रहे हैं। विद्यालय में समय सारणी है परन्तु इसका कठोर ढ़ांचा नहीं है। यदि कोई कक्षा किसी गतिविधि में संलग्न है तो धण्टी बजनें पर उसे बीच में ही बन्द नहीं किया जाता और तब तक वह जारी रह सकती है जब तक बच्चे उसे जारी रखना चाहें। पीरियड की घण्टी बजनें पर बच्चों में किसी भी प्रकार की उतावली नजर नहीं आती है। बहुत बार तो छुट्टी की घण्टी के बाद भी बच्चे किसी गतिविधि एवं कार्य में मशगूल नजर आते हैं। अध्यापको से बातचीत करने पर पता चला कि पाठ्य पुस्तकें बहुत बार बच्चों की विषयगत

दक्षताओं को बढ़ानें में मदद नहीं कर पाती हैं, अतः उन्हे पाठ्यपुस्तकों से बाहर जाकर भी विषय–वस्तु, गतिविधियां तैयार करने की जरूरत पड़ती है। अध्यापको को कक्षा–वार एवं विषय–वार दक्षताओं की ठीक–ठीक जानकारी है, यह वास्तव में बहुत सुखद है। अध्यापक को मालूम रहता है कि किसी संबोध/दक्षता में कौन सा बच्चा किस स्तर पर है ? इस प्रकार स्तर के आधार पर मोटे तौर पर कक्षा में कितने समूह हैं ? उनके पास प्रत्येक समूह के लिए कुछ–न–कुछ योजना है, गतिविधियां हैं। विद्यालय में आज के दिन जो कुछ भी सीखने–सिखाने की प्रक्रियाऐं हैं, उनसे प्राप्त हो सकने वाले उद्देश्यों को लेकर अध्यापक के मन में स्पष्टता रहती है। बच्चों को अच्छी तरह से मालूम रहता है कि आज क्या–क्या होने वाला है ? अतः कक्षायें जादूगरी का खेल नहीं होती, जिसमें कुछ घटित होने पर ही पता चलता है कि क्या हुआ। कक्षा में विषयों की दीवारें नजर नहीं आती। अगर परिवेशीय अध्ययन की कक्षा में भाषा का कोई मुद्दा आ जाता है तो उस पर बातचीत की जाती है। अध्यापको का कहना है कि मुख्य बात यह है कि बच्चों की जिज्ञासा का हम सम्मान करते हैं और यह जिज्ञासाऐं किसी विषय के फ्रेम में बंधी नहीं होती। सबसे महत्वपूर्ण बात शिक्षकों का यह मानना है कि बच्चों की जिज्ञासाओं का समाधान ठीक उसी वक्त होना बहुत जरूरी है, जब वे बच्चों के मन में कुलबुला रहीं हो, बाद में इसका कोई अर्थ नहीं रह जाता। विद्यालय के शिक्षक खुले मन से कहते हैं कि बहुत बार बच्चे को समझ में न आने का यह भी मतलब है कि हमारे पढ़ाने–लिखाने के तौर तरीकों में ही कोई खामी हो, अतः हम अपनी शिक्षण विधियों की भी समीक्षा करते रहते हैं, इससे बहुत मदद मिलती है। बहुत बार कक्षाऐं पास के किसी खेत में, विद्यालय की वाटिका में, पेड़ के नीचे, पेड़ में बैठकर चलती हैं। बच्चे बातचीत में मशगूल, खोजने में तल्लीन, अवलोकन में खोये नजर आते हैं। इन अवलोकनों एवं निरीक्षणों के आधार पर गर्मागर्म बहसें कक्षा–कक्ष में सुनायी देती हैं। सिद्धान्तों, अवधारणाओं एवं नियमों को सीधे कक्षा में बताया नहीं जाता, बच्चों की अपनी समझ बढ़ाने पर जोर रहता है और किसी उपयुक्त अवसर पर जब बच्चे समझ का एक निश्चित स्तर प्राप्त कर लेते हैं तो फिर सिद्धान्तों, अवधारणाओं एवं नियमों को समझना बच्चों के लिए सहज हो जाता है। मै विद्यालय की कुछ कक्षाओं का प्रत्यक्षदर्शी रहा हूं। इसके आलोक में कह सकता हूं कि बच्चों को ऐसे अवसर प्रचुरता में मिलते हैं जिसमें बच्चों का सीखना अर्थपूर्ण हों, बच्चे ज्ञान का सृजन करें, सूचनाओं को रटें नहीं। महत्वपूर्ण यह है कि कक्षा–कक्ष का वातावरण दवाब, नियंत्रण एवं बोरियत को प्रतिम्बित करता है या एक ऐसा स्थान है जहां नए विचारों की खोज के लिए खुलापन एवं आजादी है, तुरन्त उत्तर देने का दवाब नहीं है।

5. विद्यार्थी की सहभागिता–सीखना अत्यन्त व्यक्तिगत और व्यक्तिनिष्ठ अनुभव है, विद्यालय मानकों एवं मानदण्डों के आलोक में वस्तुनिष्टता लाने का प्रयास करते हैं। इससे प्रत्येक बच्चे की ज्ञान सृजन में भागीदारी पर असर पड़ता है। कक्षा–कक्ष में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दो अहम् हिस्से हैं। पहला–शिक्षण के माध्यम से ज्ञानार्जन दौर दूसरा–अभ्यास

के माध्यम से एक दक्षता हासिल करना और उसे सुदृढ़ करना। पहला तो शिक्षक के कार्य–क्षेत्र में आता है और दूसरा विद्यार्थी द्वारा की गयी मेहनत पर निर्भर करता है। बच्चों को कक्षा में ऐसे लोकतांत्रिक ढ़ांचे से परिचित कराया जाना चाहिये, जिसमें हर एक सीखने वाले का सम्मान हो, सहभागिता हो, जहां सभी बच्चों को एक भय–रहित एवं अपनी ही गति से सीखने का अवसर प्रदान किया जाये। सहभागिता की प्रक्रिया यह सुनिश्चित करने में मददगार होती है कि बच्चा सीखने की जिम्मेदारी लें और अध्यापक सिखाने की। सीखने में अधिगमकर्ता की सहभागिता तभी संभव हो सकती है, जब सीखना इनके लिए अर्थपूर्ण हो। जो जाना गया, समझा गया, सीखा गया, उसमें बच्चे की अधिकारिता (ownership) हो। इस लिहाज से विद्यालय में बच्चों को कक्षा–कक्ष एवं कक्षा–कक्ष के बाहर भी सक्रिय देखा जा सकता है कि वे कक्षा वादनों एवं गतिविधि के बाद भी निरन्तर जांच–पड़ताल, खोजबीन एवं बातचीत की प्रक्रिया में संलग्न हैं। विद्यालय के वादनों की घंटियां इसमें कोई व्यवधान नहीं डालती हैं। वस्तुतः यह एक तरफा नहीं होता है। यदि ऐसा दिखलायी पड़ता है तो इसमें शिक्षकों की कम भूमिका नहीं है। बच्चे अपनें प्रश्नों, जिज्ञासाओं एवं दुविधाओं को लेकर कभी भी शिक्षकों के पास जा सकते हैं, इसमें वादन एवं विषयों का कोई बंधन नहीं होता है। इस विद्यालय में यह दृश्य आम है कि बच्चे किसी न किसी मामले में किसी न किसी शिक्षक के पास नजर आते हैं। यह खुलापन बच्चों की सहभागिता को बढ़ाने में बहुत मददगार प्रतीत होता हैं। अध्यापको से इस बारे में बातचीत करने पर, वे बताते हैं कि उन्होंने विद्यालय में सहभागिता के मूल्यों की स्थापना के लिए कुछ मार्गदर्शक सिद्धान्त तय किए हैं। इसमें से प्रमुख निम्न हैं–

1. स्कूल में स्वीकार्यता एवं सम्मान की संस्कृति को अपना रहे हैं, जिससे सभी बच्चों की आवश्यकता के मघ्येनजर समावेशन की संस्कृति को प्रोत्साहन मिल सके।
2. हम सीखने–सिखाने पर ध्यान देते हैं न कि इस बात पर कि कोर्स किस तरह से पूरा किया जाये?
3. यदि सीखने में आनन्द पैदा किया जा सके तो बच्चे जरूर सीखेंगे और जीवन भर सीखने का आनन्द उठा सकेंगे।
4. बच्चे तो जन्मजात जिज्ञासु होते हैं और हमारा हमेशा यह प्रयास रहेगा कि हम यथा संभव उनकी जिज्ञासाओं को शान्त करने के लिए वातावरण बनायें। बच्चों की जिज्ञासाओं का सदैव सम्मान करें।

यह मूल्य प्रणाली बच्चों को सहभागी बनाने में बहुत हद तक सफल दिखलायी पड़ती है।

6. समुदाय का विश्वास एवं सरोकार–विद्यालय पर समुदाय का विश्वास निरंतर मजबूत होता जा रहा है। विद्यालय की जरूरतों के प्रति समुदाय, क्षेत्र के विधायक, जनप्रतिनिधि, सामाजिक संस्थाएं सरोकार रखने लगी हैं और यथा संभव मदद भी कर रही हैं। यह एकाएक

नहीं हुआ, इसके लिया विद्यालय को सकारात्मक परिणाम देने पड़े। इस प्रकार से विश्वास प्राप्त करने की प्रक्रिया के साथ विद्यालय एक ब्रांड के रूप में स्थापित होने लगा है। विगत वर्ष एवं वर्तमान वर्ष तक विद्यालय को निम्नांकित संसाधन समुदाय एवं अन्य श्रोतो से प्राप्त हुए हैं –

- जिला पंचायत अध्यक्ष द्वारा विद्यालय के सभी बच्चों के लिए ब्लेजर (कोट) उपलब्ध कराये गए हैं।
- जिलाधिकारी द्वारा कम्प्यूटर एवं एल0 सी0 डी0 उपलब्ध कराना।
- विद्यालय में अतिरिक्त कक्षा–कक्ष की आवश्यकता पूर्ति के लिए विद्यालय के बरामदे के एक हिस्से को कक्ष मके रूप में विकसित करने के लिए क्षेत्रीय विधयक द्वारा विधयक निधि से अनुदान।
- विद्यालय प्रांगण की मरम्मत हेतु विधायक निधि से अनुदान 1.50 लाख रूपये अनुदान।
- विद्यालय पुस्तकालय हेतु क्षेत्रीय विधायक द्वारा पुस्तकें उपलब्ध कराना।
- नगर पंचायत अध्यक्ष द्वारा विद्यालय परिसर में हाईटेक शौचालय एवं बिजली की व्यवस्था कराना।
- नागरिक मंच सोसाइटी द्वारा प्रिंटर एवं पुस्तके उपलब्ध कराना।
- विद्यालय प्रबंध समिति द्वारा 2.00 लाख रूपये की सहयोग राशि प्रदान करना ।

श्रोत : रा0 आ0 प्रा0 वि0 कपकोट, कार्यालय अभिलेख.

विद्यालय के प्रधानाध्यापक इस उपलब्धि से बहुत संतुष्ट नजर नहीं आते हैं। उनका मत है कि वह उस दिन खुश होंगे जब विद्यालय से शिक्षा पूरी करने वाला प्रत्येक बच्चा इस तरह से कहीं न कहीं चयनित हो जायेगा। इस प्रकार से अपने लिए उन्होंने कड़े लक्ष्य निर्धारित किए हैं। ऐसे विद्यालय पर समुदाय का विश्वास जमना लाजिमी है। विद्यालय के कार्य घंटों में अभिभावकों का विद्यालय में निरन्तर संपर्क, अपने पाल्यों की प्रगति के बारे में जानने का प्रयास बहुत उम्मीद जगाता है। अभिभावकों की निरन्तर आवाजाही से विद्यालय में शिक्षण गतिविधियां प्रभावित हो रही थी सो मैने सुझाव दिया कि प्रत्येक शनिवार को बाल सभा के कार्यक्रम से पहले अभिभावकों से मिलने का समय निर्धारित कर सकते हैं। ऐसा करने से अभिभावक, बच्चों की बाल सभा के कार्यक्रमों में शामिल होने का अवसर निकाल सकेंगे। इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम दिखलायी देने लगे हैं। समुदाय का इस विद्यालय के प्रति विश्वास न केवल शिक्षकों के मनोबल को बढ़ा रहा है वरन् समुदाय के समर्थ लोग विद्यालय के लिए जरूरत पड़ने पर संसाधन में योगदान के लिए भी तत्पर रहते हैं। विद्यालय की छुट्टी के समय बच्चों को अपने साथ घर ले जाने के लिए प्रतीक्षारत माताओं, दादीयों से एक बार

अनौपचारिक बातचीत में मैंने हिम्मत करके पूछ ही लिया कि इस स्कूल में ऐसा क्या है ? जो आप अपने बच्चों को यहां पढाना चाहती हैं। उन्होंने लगभग एक स्वर में कुमाउनी में बताया ''ख्याली दत्त ज्यू मासाब जा जाल् हम अपुण नानतिनैक् वै पढुलु।'' इसका हिन्दी भावानुवाद यह है कि ख्याली दत्त मास्टर साहब जहां भी जायेंगे, हम अपने बच्चों को वहीं पढ़ाने भेजेंगे। ऐसा है भी, श्री ख्याली दत्त शर्मा जी विगत में दूरस्थ विद्यालय से मॉडल विद्यालय को संचालित करने यहां नियुक्त हुए तों उन दूरस्थ गांवों से माता–दादी कपकोट में कमरा लेकर बच्चों को इसी विद्यालय में पढ़ाने ले आये। यह विद्यालय के लिए बहुत ही सराहनीय फीडबैक है, विशेषकर जब वह एक सरकारी विद्यालय हो तो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है।

7. विद्यालय की उपलब्धियां–किसी भी विद्यालयी की प्रभावकारिता का सामान्य पैमाना यह माना जाता है कि वहां अध्ययन करने वाले बच्चे आगे की शिक्षा में किस प्रकार से आगे बढ़ रहे हैं ? किन जगहों के लिए चयनित हो रहे हैं। इसी के आधार पर जन सामान्य में विद्यालय की छवि बनती है। इस मानक में यह विद्यालय पूरी तरह से खरा उतरता है। मॉडल स्कूल के रूप में शुरुआत करने के वर्ष 2015–16 से इस विद्यालय से बच्चों का चयन जवाहर नवोदय विद्यालय, हिम ज्योति फाउण्डेशन, राजीव गांधी नवोदय विद्यालय एवं सैनिक स्कूल घोड़ाखाल के लिए हुआ है। इसका विवरण निम्नांकित तालिका में दिया गया है–

तालिका 03
विद्यालय की उपलब्धियां

क्र0सं0	संस्थाए जहाँ विद्यालय के बच्चों का चयन हुआ	वर्ष 2016–17 में चयनित बच्चों की संख्या	वर्ष 2017–18 में चयनित बच्चों की संख्या
1.	अखिल भारतीय सैनिक स्कूल घोडाखाल	04	05
2.	जवाहर नवोदय विद्यालय	जवाहर नवोदय विद्यालय शहरी क्षेत्र की सभी सीटों के लिए बच्चों का चयन	06
3.	हिम ज्योति फाउन्डेशन	03	04
4.	राज्य स्तरीय मैथ्स विजार्ड प्रतियोगिता	राज्य में प्रथम स्थान	राज्य में प्रथम स्थान

श्रोत : रा0 आ0 प्रा0 वि0 कपकोट, कार्यालय अभिलेख.

समेकन

विद्यालय की विश्वसनीयता एवं ब्रांड के रूप में स्थापित होने की प्रक्रिया के उक्त विमर्श से सरकारी विद्यालयों की ब्रांडिंग के बारे में कुछ महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है। विद्यालय

ब्रांडिंग कम समय में एकाएक संपन्न हो जाने वाली प्रक्रिया नहीं है। इसमें वक्त लगना लाजिमी है और इसके लिए **संसाधन, स्वायत्तता** एवं **समर्थन** की जरुरत होती है।

- संसाधन, जिसमे मानव, भौतिक एवं वित्तीय सभी प्रकार के संसाधन शामिल हैं, की उपलब्धता जरुरी है। इसमें भी मानव संसाधन (शिक्षक) की उपलब्धता प्राथमिकता के आधार पर करने की आवश्यकता होती है। उक्त विद्यालय को विश्वसनीय ब्रांड बनने में इस बात ने खास असर डाला कि विद्यालय में प्रत्येक कक्षा एवं विषयों के अध्यापक नियुक्त किये गए, अन्य चीजें समय के साथ–साथ उपलब्ध होती गयी। आज भी हम जी0डी0पी0 का बहुत कम हिस्सा (3% के आस–पास) शिक्षा पर खर्च कर पा रहे हैं। समुदाय से छोटे–मोटे सहयोग की उम्मीद की जा सकती है, बड़ा निवेश तो सरकार को ही करना होगा। समुदाय तो विद्यालय की विश्वसनीयता एवं उपलब्धि के बाद ही सहयोग की मुद्रा में आता है।
- स्वायत्तता, यह विद्यालय स्तर पर शिक्षकों को लेनी होगी और उच्च स्तर से इसका अनुसमर्थन मिलना जरुरी है। उक्त विद्यालय के सन्दर्भ में निजी विद्यालयों के बरक्श नर्सरी कक्षाओं का सञ्चालन करके विद्यालय ने न केवल विद्यालय में नामांकन की बड़ी संख्या को सुनिश्चित किया वरन समुदाय में स्वीकार्यता भी प्राप्त की। ऐसा करके विद्यालय ने निजी स्कूलों की चुनौती का उनके ही तौर–तरीकों एवं रणनीति से सामना किया और सफलता भी प्राप्त की।
- अपनी पहचान एवं विश्वसनीयता प्राप्त करने के दौर में और उसके बाद भी विद्यालय को उच्च स्तर से निरन्तर समर्थन की जरुरत होती है। समुदाय तो परिणाम एवं उपलब्धियों के बाद समर्थन की मुद्रा में आता है, इसके पूर्व उच्च स्तर से प्राप्त अनुसमर्थन विद्यालय एवं शिक्षकों का मनोबल बनाये रखने के लिए बहुत अहम् होता है।

अंत में निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि अब, जबकि बच्चों का निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार मौलिक अधिकार के रूप में हमारे संविधान का अंग बन गया है, तो राज्यध राष्ट्र की अहम् जवाबदेही बन जाती है कि बच्चों के लिए विश्वसनीय सरकारी स्कूलों की उपलब्धता सुनिश्चित करे, उनकी ब्रांड स्थापना में मदद करे। जैसा कि इस आलेख के शुरूआती हिस्से में उल्लेख किया गया है कि आज भी बड़ी संख्या में बच्चों को सरकारी स्कूलों की जरुरत है, सभी माता–पिता एवं अभिभावक खर्चीले निजी स्कूलों को अफोर्ड (Afford) नहीं कर सकते हैं।

(5413 शब्द)

सन्दर्भ

1. Palmer, T., (2007), Internationaler TDP Workshop, Tampa, FL April 22nd, 2007, The Lauder Institute, Wharton , Art & Science, University of Pennsylvania. "Brand Positioning is the Perception of your program, school, or degree in the minds of your customers and stakeholders." (Tonio Palmer, 2007)
2. VikiVikipedia, The Free encyclopedia, https://en.wikipedia.org/wiki/School_branding Retrived as on 2 March, 2018, 11.50 pm. "The process involved in creating a unique name and image for a product in the consumers' mind, mainly through advertising campaigns with a consistent theme. Branding aims to establish a significant and differentiated presence in the market that attracts and retains loyal customers."

   See other definition ' The "market space" a brand is perceived to occupy; the part of the brand identity that is to be actively communicated in a way that meaningfully sets it apart from the competition. (www.allaboutbranding.com).